दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 29.08.2022

प्रकाशनार्थ

29 अगस्त, 2022 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर में युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के पॉचवें दिन राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित **"नाथपंथ, राष्ट्रचिन्तन एवं राष्ट्रनिर्माण"** विषय पर बोलते हुए डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर ने कहा कि समाज की उन्नति में राष्ट्रउत्थान प्रतिविम्बित होता है। जब यह समाज ऊर्ध्व गति करता है तो राष्ट्र उन्नति करता है। आज से हजारों वर्ष पूर्व गुरू गोरक्षनाथ जी द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त जाति की जड़ता, छूआ–छूत की विषमता, अवमानीवय रूढ़ियों की बेड़ियों और आडम्बर के जाल से मुक्त कराने हेतु किये गये सामाजिक क्रान्ति की शंखनाद नाथपंथ था। एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्पना का जनक एवं संवाहक नाथपंथ है। आज भी गोरक्षपीठ इस संकल्प को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है।

उन्होंने आगे कहा कि विभेद मुक्त समरस समाज की स्थापना द्वारा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के स्वप्न को साकार करता नाथपंथ का दर्शन राष्ट्रनिर्माण के अनुष्ठान में परोक्ष/अपरोक्ष रूप से महती भूमिका निभा रहा है। इसी दिशा में चिन्तन करते हुए महायोगी गोरखनाथ ने सामाजिक पुर्नजागरण का शंखनाद किया। महायोगी गोरखनाथ पहले तपस्वी है, जिन्होने विशुद्ध योगी एवं तपस्वी होते हुए भी सामाजिक राष्ट्रीय चेतना का नेतृत्व किया। उनके बाद महन्त दिग्विजयनाथ, महन्त अवेद्यनाथ से होते हुए योगी आदित्यनाथ तक नाथपंथ की इस योगी परम्परा ने प्रत्येक प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का मुखरता के साथ प्रतिकार किया। नाथपंथ की पराम्परा में विश्व का सर्वोच्च नाथपंथी केन्द्र गोरखनाथ मंदिर के कपाट सदैव सभी के लिए खुले रहते है।

स्वाधीनता संघर्ष में भी गोरखनाथ मंदिर के योगियों ने राष्ट्ररक्षा में स्वयं सहभागी बनते हुए सुक्त समाज के राष्ट्रीय बोध को जागृति करने का युगान्तकारी कार्य किया था। मध्ययुगीन पराधीनता से लेकर आधुनिक युग की ब्रितानी गुलामी तक नाथपंथ की हुकांर सुनने को मिलती है। श्री गोरखनाथ मंदिर पूर्वी उत्तर प्रदेश में क्रान्तिकारियों का प्रमुख आश्रयस्थल था। इन्हीं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में महन्त दिग्विजयनाथ स्वाधीनता संग्राम में सहभागिता करते हुए विख्यात चौरी–चौरा घटना में मुख्य आरोपित बने थे। राष्ट्रचिन्तन एवं राष्ट्रीय भावना के प्रवाहमान गोमुख नाथपंथ से प्रवाहित होती सामाजिक समरसता की गंगा अततः राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के गंगा सागर में सामाहित होकर मॉ भारती को परम वैभव तक ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति समृद्ध रही है। विश्व में सिन्धु सभ्यता प्रथम नगरीय क्रान्ति की प्रतीक थी। जिसका विश्व के अनेक सभ्यताओं ने अनुकरण किया है। भारत कृषि, ऋषि एवं मनीषी परम्परा का वाहक है। विदेशी अक्रान्ताओं के प्रभाव से यह परम्परा खड़ित हुई और भारत ने सोने की चिड़िया का वैभव खो दिया। पुनः सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत हमारी संत परम्परा ने खोयों हुए भारतीय वैभव को प्राप्त करने का प्रयास किया जिनमें स्वामी विवेकानन्द, सहजानन्द, महन्त दिग्विजयनाथ एवं नाथपंथी सिद्धों ने भारत के सांस्कृतिक गौरव को स्थापित किया। इस परंम्परा के वाहक के रूप में गोरखनाथ सिद्धपीठ को देखा जा सकता है। भारतीय मनीषियों ने समाज के अन्दर लोक संस्कृति को जागृत करने का लक्ष्य बनाया जो राष्ट्र की स्वतन्त्रता का वाहक बना।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रियंका सिंह अतिथि स्वागत एवं आभार ज्ञापन श्री इन्द्रेश पाण्डेय ने किया। उक्त कार्यक्रम में डॉ. अखिल श्रीवास्तव, डॉ. शैलेश कुमार सिंह, डॉ. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. नित्यानन्द श्रीवास्तव, डॉ. सत्यपाल सिंह, श्रीमती निधि राय, डॉ. अदिति सहित महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी तथा छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहें।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी
सूचना एवं जनसम्पर्क